[This question paper contains 4 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 166 **D** **Your Roll No.....**

Unique Paper Code : 205481

Name of the Course : **B.Com. (Prog.)**

Name of the Paper : आधुनिक भारतीय भाषा : हिन्दी - क (CP 4.5)

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) "पावक-सरोवर में अवभृथ स्नान था
आत्म-सम्मान-यज्ञ की वह पूर्णाहुति
सुना-जिस दिन पद्मिनी का जल मरना
सती के पवित्र आत्मगौरव की पुण्य-गाथा
गूँज उठी भारत के कोने-कोने जिस दिन;
उन्नत हुआ था भाल
महिला-महत्त्व का।

अथवा

जितने उत्पीड़न थे चूर हो दबे हुए,
अपना अस्तित्व हैं पुकारते,
नश्वर संसार में
ठोस प्रतिहिंसा की प्रतिध्वनि हैं चाहते।" (5)

P.T.O.

(ख) पुत्तर ज़ुल्म को ज़ुल्म से ख़त्म नहीं कर सकदे .. नेकी, शराफ़त, ईमानदारी से ज़ुल्म ख़त्म होंदा है ..जानवर तक प्यार नाल पालतू बन जांदा है ..तुसी इंसान ते ज़ुलम करके खुदा नू की मुँह दिखाओगे ? इस्लाम ज़ुल्म दे खिलाफ़ है ..जो ज़ुल्म करदे ने ओ मुसलमान नहीं है ..समझे .. इरशाद है कि तुम ज़मीन वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा ।

अथवा

नहीं-नहीं ये बात नहीं है, हर जगह, जिंदगी के हर शोबे में शायर हैं ..ये ज़रूरी नहीं कि वो शायरी कर रहें हों ..वो तखलीकी लोग हैं । छोटे-मोटे मजदूर, दफ़्तरों के क्लर्क, अपने काम से काम रखने वाले ईमानदार लोग ..ट्रेन के इंजन का ड्राइवर जो इतने हज़ार लोगों को लाहौर से करांची और करांची से लाहौर ले जाता है । मुझे ये आदमी बहुत पसंद हैं ..और एक वो आदमी जो रेलवे के फाटक बंद करता है । आपको पता है अगर वो फाटक खोल दे, जब गाड़ी आ रही है तो क्या कयामत आए ? बस शायर का भी यही काम है कि किस वक्त फाटक बंद करना है, किस वक़्त खोलना है । (5)

(ग) मनुष्य में ममत्व प्रधान है । प्रत्येक मनुष्य सुख चाहता है । केवल व्यक्तियों के सुख के केंद्र भिन्न होते हैं । कुछ सुख को धन में देखते हैं, कुछ सुख को मदिरा में देखते हैं, कुछ सुख को व्यभिचार में देखते हैं, कुछ त्याग में देखते हैं - पर सुख प्रत्येक व्यक्ति चाहता है; कोई भी व्यक्ति संसार में अपनी इच्छानुसार वह काम न करेगा, जिसमें दुख मिले - यही मनुष्य की मनः प्रवृति है और उसके दृष्टिकोण की विषमता है ।

अथवा

"आज मैंने एक नई बात सोची है देवि चित्रलेखा ! विराग मनुष्य के लिए असंभव है; क्योंकि विराग नकारात्मक है । विराग का आधार शून्य है - कुछ नहीं है । ऐसी अवस्था में जब कोई कहता है कि वह विरागी है, गलत कहता है; क्योंकि उस समय वह यह कहना चाहता है कि उसका संसार के प्रति विराग है । पर साथ ही किसी के प्रति उसका अनुराग अवश्य है, उसके अनुराग का केंद्र है ब्रहम। जीवन का कार्यक्रम है रचनात्मक, विनाशात्मक नहीं; मनुष्य का कर्तव्य है अनुराग, विराग नहीं । (5)

2. 'प्रलय की छाया' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

अथवा

'प्रलय की छाया' कविता आज के संदर्भ में भी प्रासंगिक है, विवेचन कीजिए। (10)

3. नाटक के तत्वों के आधार पर 'जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ' की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ' नाटक भारत-विभाजन की त्रासदी की अभिव्यक्ति है।' स्पष्ट कीजिए। (10)

4. 'चित्रलेखा' उपन्यास के आधार पर चित्रलेखा के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।

अथवा

'चित्रलेखा' की मूल समस्या पर विचार कीजिए। (10)

5. 'कलयुग' फिल्म का क्या संदेश है ? लिखिए।

अथवा

आज के संदर्भ में 'कलयुग' फिल्म की प्रासंगिकता का विवेचन कीजिए। (10)

6. 'कलयुग' फिल्म की दृश्य-योजना की चर्चा कीजिए।

अथवा

'कलयुग' की संवाद-योजना का मूल्यांकन कीजिए। (5)

7. किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए :- (15)

(क) राम काव्य-धारा की प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए।

(ख) रीति-मुक्त काव्यधारा की सामान्य प्रवृत्तियों को रेखांकित कीजिए।

(ग) छायावादी काव्य-प्रवृत्तियों पर विचार कीजिए।

(घ) 'प्रगतिवाद' की काव्य-प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।